IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

आधुनिक तकनीकी तथा स्वतंत्रता के संदर्भ में अलगाव का अध्ययन

प्रदीप कुमार
सहायक प्राध्यापक
समाजशास्त्र विभाग
सरदार महिपाल राजेंद्र जनजातीय पी. जी. कॉलेज साहिया, देहरादून उत्तराखण्ड

सारांशः

वर्तमान समय में अलगाव की अवधारणा को प्रायः कम प्रासंगिक माना जा रहा है, क्योंकि यह समझा जाता है कि इस पर पहले ही पर्याप्त अध्ययन हो चुका है। किंतु यह दृष्टिकोण अधूरा है, क्योंकि समाज में यदि कोई विचार या प्रक्रिया विद्यमान है, तो वह समय के साथ केवल अपना स्वरूप बदलती है, समाप्त नहीं होती। अतः अलगाव की अवधारणा आज भी उतनी ही प्रासंगिक है, विशेषकर जब हम तकनीकी आधुनिकता के परिप्रेक्ष्य में समाज का मूल्यांकन करते हैं।

अब तक अलगाव की चर्चा मुख्यतः पारंपरिक आधुनिकता के सन्दर्भ में हुई है, किन्तु वर्तमान समय में आधुनिकता ने तकनीकी का नया रूप धारण कर लिया है, जैसे कृत्रिम बुद्धिमत्ता, ऑटोमेशन, सोशल मीडिया आदि जो समाज की संरचना और व्यक्ति के व्यवहार को एक नवीन ढंग से प्रभावित कर रहे हैं।

अलगाव की प्रक्रिया व्यक्ति के समाज से सामंजस्य स्थापित करने की क्षमता पर निर्भर करती है। जैसे–जैसे तकनीकी परिवर्तन तीव्र और जटिल होते जा रहे हैं, वैसे–वैसे कुछ व्यक्तियों के लिए इन परिवर्तनों के साथ सामंजस्य स्थापित करना कठिन होता जा रहा है। इस असमर्थता की स्थिति में व्यक्ति समाज की मुख्य धारा से कट सकता है, जिससे अलगाव की स्थिति उत्पन्न होती है।

यह शोधपत्र तकनीकी आधुनिकता के साथ स्वतंत्रता के बदलते स्वरूप और उससे उत्पन्न सामाजिक–व्यक्तिगत तनावों के मध्य संबंध को समझने का प्रयास करेगा। यह अध्ययन विशेष रूप से इस बात पर केंद्रित होगा कि कैसे तकनीकी विकास व्यक्ति के सामाजिक संबंधों, आत्मबोध और मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित कर रहा है, तथा इस प्रक्रिया में अलगाव किस प्रकार एक पुनः उभरती हुई चुनौती बनकर सामने आ रही है।

शब्द कुंजी: अलगाव, अवधारणा, आधुनिकता, परिप्रेक्ष्य, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, आत्मबोध, डिजिटल युग

प्रस्तावनाः अलगाव एक अवधारणा

समाजशास्त्र की प्रमुख अवधारणाओं में 'अलगाव' एक अत्यंत महत्वपूर्ण और बहुआयामी अवधारणा है, जिसकी प्रासंगिकता आज के बदलते समाज में और भी अधिक बढ़ गई है। यद्यपि यह विचार ऐतिहासिक रूप से पुराना है, परंतु इसका सबसे अधिक विवेचन और विवाद पूंजीवादी समाज के संदर्भ में हुआ है। विशेष रूप से कार्ल मार्क्स ने अलगाव की व्याख्या पूंजीवादी उत्पादन प्रणाली की आलोचना करते हुए की, जिसमें मनुष्य श्रम, प्रकृति, समाज और अंततः स्वयं से ही कट जाता है। मार्क्स के अनुसार यह स्थिति पूंजीवादी ढांचे की अनिवार्य परिणति है, जिससे मनुष्य अपनी मानवीय चेतना और सामाजिक जुड़ाव से वंचित हो जाता है।

'अलगाव' शब्द का प्रयोग प्रारंभ में मानसिक रूप से असंतुलित व्यक्तियों के लिए होता था, किंतु समय के साथ इसका आशय बदलते हुए सामाजिक और आत्मिक स्तर पर मनुष्य की अजनबी भावना, असुरक्षा और निरर्थकता के अनुभव से जुड़ गया। यह वह स्थिति है जिसमें व्यक्ति अपने भविष्य को लेकर अनिश्चित, असहाय और अस्तित्वहीनता की भावना से ग्रस्त होता है। प्रचलित सामाजिक मूल्यों व मान्यताओं से उसका विश्वास उठने लगता है और वह अपने जीवन, कार्य और संबंधों से संतुष्टि नहीं प्राप्त कर पाता।

वर्तमान युग को यदि हम तकनीकी आधुनिकता और उपभोक्तावादी संस्कृति का युग कहें, तो यह कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। तकनीकी विकास ने जहाँ एक ओर जीवन को सहज बनाया है, वहीं दूसरी ओर इसने सामाजिक संरचना, संबंधों और मनोवैज्ञानिक अवस्थाओं को गहराई से प्रभावित किया है। मनुष्य अब मशीनों, स्क्रीन और कृत्रिम वातावरण में इतना अधिक लिप्त हो गया है कि उसका जुड़ाव प्रकृति, परिवार, समाज और यहां तक कि स्वयं के साथ भी कमजोर

होता जा रहा है। आधुनिक जीवनशैली ने भौतिकता को इतना अधिक महत्त्व दिया है कि व्यक्ति का मूल्यांकन उसकी उपयोगिता, उत्पादकता और उपभोग क्षमता से होने लगा है।

इस परिप्रेक्ष्य में, मार्क्स का द्वंद्वात्मक भौतिकवाद का सिद्धांत विशेष रूप से प्रासंगिक हो जाता है, जिसके अनुसार समाज और सृष्टि का विकास विरोधी शक्तियों के संघर्ष से होता है, और यह संघर्ष मुख्यतः भौतिक संसाधनों पर आधारित होता है। इस सिद्धांत के अनुसार, समाज में मौजूद भौतिक परिस्थितियाँ ही विचारों और चेतना को जन्म देती हैं। इसलिए जब समाज में भौतिकता प्रधान हो जाती है, तो व्यक्ति की सोच, भावना और सामाजिक जुड़ाव भी उसी के अनुरूप ढलने लगते हैं।

आज के जटिल, औद्योगिक और तकनीकी समाज में द्वितीयक संबंध, व्यक्तिवाद और औपचारिकता की प्रधानता है। सामूहिकता, आत्मीयता और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसी अवधारणाएँ पीछे छूटती जा रही हैं। परिणामस्वरूप, व्यक्ति केवल एक उपभोक्ता या कार्यकर्ता के रूप में सीमित रह गया है, जो अपनी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए निरंतर प्रयासरत तो है, परंतु सामाजिक, सांस्कृतिक और आत्मिक रूप से वह दिन–ब–दिन अलगाव की स्थिति में फँसता जा रहा है।

इस शोध का उद्देश्य आधुनिकता, तकनीकी विकास और भौतिकवादी जीवनशैली के अंतर्संबंधों की पड़ताल करते हुए यह विश्लेषण करना है कि कैसे ये तत्व व्यक्ति के अलगाव को जन्म दे रहे हैं। साथ ही, यह प्रयास भी किया जाएगा कि मार्क्स के सिद्धांतों विशेषतः द्वंद्वात्मक भौतिकवाद के माध्यम से इस सामाजिक–मानव वैज्ञानिक प्रक्रिया की गहन समझ विकसित की जा सके।

इस शोध के माध्यम से यह स्पष्ट करने का प्रयास किया जाएगा कि आज का तकनीकी और भौतिकतावादी समाज किस प्रकार एक 'अलगाव–जन्य समाज' में रूपांतरित हो रहा है, जहाँ व्यक्ति बाह्य रूप से तो जुड़ा प्रतीत होता है, परंतु आंतरिक रूप से अत्यंत पृथक और अकेला अनुभव करता है।

तकनीकी आधुनिकता के बदलते स्वरूपः

मानव सभ्यता आज एक आधुनिक और तकनीकी सभ्यता में परिवर्तित हो चुकी है, जिसमें समाज की प्रत्येक संस्था और सामाजिक परिवेश धीरे–धीरे यांत्रिक होता जा रहा है। आधुनिक विकास ने मानव जीवन को सरल, सहज और सुविधाजनक बनाया है। चिकित्सा, शिक्षा, वैज्ञानिक उपकरण, यांत्रिकी, रोबोटिक्स, इंटरनेट और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसे क्षेत्र मानव बौद्धिक क्षमता और जिज्ञासा के आधार पर विकसित हुए हैं। मानव ने सामान्य कृषि उपकरणों से लेकर परमाणु ऊर्जा तक का लंबा सफर तय किया है।

आज के तकनीकी युग में मनुष्य विभिन्न वैज्ञानिक उपकरणों और तकनीकों से घिरा हुआ है तथा रोजाना उनके नवीनतम रूपों से परिचित हो रहा है। तकनीक का प्रभाव समाज के प्रत्येक क्षेत्र आर्थिक, सामाजिक, वैश्विक और राजनीतिक पर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। इस प्रकार, आधुनिक तकनीकी प्रगति ने मानव जीवन और समाज की संरचना को गहराई से प्रभावित किया है और भविष्य में भी इसका प्रभाव बढ़ता रहेगा।

आधुनिक तकनीकी और अलगाव :

इस शोध का विश्लेषण यह दर्शाता है कि मानव सभ्यता का विकास एक निरंतर संघर्ष की प्रक्रिया रही है, जिसमें मनुष्य ने प्रकृति पर विजय प्राप्त करने से लेकर एक संगठित सामाजिक व्यवस्था के निर्माण तक का लम्बा मार्ग तय किया। इस विकास यात्रा में मनुष्य ने जहां एक ओर सामाजिक संस्थाओं, जैसे परिवार, धर्म, ग्राम तथा समुदाय का निर्माण कर सामाजिक सामूहिकता एवं प्राथमिक संबंधों को महत्व प्रदान किया, वहीं दूसरी ओर यह भी देखा गया कि इन सामाजिक संरचनाओं ने एक विशिष्ट प्रकार की व्यवस्था को जन्म दिया जिसमें संसाधनों पर अधिकार, जातीय एवं नृजातीय भेदभाव, तथा शोषण जैसी प्रवृत्तियाँ विकसित हुईं।

शोध में यह स्पष्ट हुआ कि सामाजिक व्यवस्था की मजबूती के साथ ही व्यक्ति की स्वतंत्रता का दमन भी हुआ। इतिहास में यह देखा गया कि मनुष्य हमेशा किसी न किसी रूप में दासता से ग्रसित रहा है, चाहे वह प्रकृति की शक्तियों का भय रहा हो, धार्मिक संस्थानों का प्रभुत्व, औपनिवेशिक शोषण या आधुनिक युग में पूंजीवादी संरचना की पकड़। प्रत्येक युग में व्यक्ति ने स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किया, और यह संघर्ष आधुनिक युग में आकर एक नई दिशा में पहुंचा।

परिणामस्वरूप, आधुनिक युग में व्यक्ति ने भले ही तकनीकी उन्नति एवं उपभोक्तावादी सुविधाओं के माध्यम से स्वतंत्रता प्राप्त की हो, परंतु यह स्वतंत्रता भी एक नई प्रकार की दासता को जन्म देती प्रतीत होती है जिसे 'तकनीकी गुलामी' कहा जा सकता है। व्यक्ति आज सोशल मीडिया, इंटरनेट, तकनीकी उपकरणों के माध्यम से भले ही जुड़ा हुआ प्रतीत होता है, परंतु वह आंतरिक रूप से अलगाव, असुरक्षा तथा मानसिक अवसाद का अनुभव कर रहा है। इस प्रकार, आधुनिक स्वतंत्रता, वास्तविक मुक्ति के बजाय, एक भ्रम बनकर उभरी है जो व्यक्ति को एक और प्रकार की दासता की ओर ले जा रही है।

उद्देश्य :

(क) भौतिकता व स्वतंत्रता के संदर्भ में समाज के व्यवहार पर पड़ने वाले प्रभाव का विश्लेषण करना।
(ख) तकनीकी, स्वतंत्रता व अलगाव के सिद्धांतों का मानव व्यवहार के सम्बंध में प्रासंगिकता का विश्लेषण करना।
(ग) जटिल समाज में विकसित होने वाली मानसिकता का भौतिकता, स्वतंत्रता के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन करना।
(घ) वर्तमान समय में कार्ल मार्क्स के अलगाव के सिद्धांत की प्रासंगिकता का विश्लेषण करना।

शोध विधि:

शोध विधि के रूप में व्याख्यात्मक प्रविधि का उपयोग किया गया है आंकडों के एकत्रीकरण के लिए द्वितीयक स्रोत का उपयोग किया गया है।

निष्कर्ष:

यह शोध दर्शाता है कि तकनीकी आधुनिकता और उपभोक्तावाद ने मनुष्य को बाह्य रूप से जुड़ा हुआ तो दिखाया है, परंतु आंतरिक रूप से वह पहले से अधिक अकेला और अलग–थलग हो गया है। मार्क्स की 'अलगाव' की अवधारणा आज के डिजिटल युग में और भी प्रासंगिक हो उठी है, जहाँ व्यक्ति तकनीकी उपकरणों और आभासी संबंधों के बावजूद आत्मबोध, सामाजिकता और मानसिक संतुलन से कटता जा रहा है। आधुनिक स्वतंत्रता अब एक नए प्रकार की तकनीकी दासता में बदल रही है। अतः आवश्यक है कि तकनीकी विकास के साथ–साथ मानवीय संबंधों और संवेदनाओं को भी पुनः सशक्त किया जाए, ताकि अलगाव की इस बढ़ती समस्या से निपटा जा सके।

संदर्भ सूची:

पापेनहाइम, फ्रिट्ज: द एलीनेशन ऑफ मॉर्डन मैन; एन इंटरपीटेशन बेस्ड ऑन मार्क्स एण्ड टॉनीज, न्यूयॉर्क मंथली रिव्यू प्रेस न्यूयॉर्क, 1968

सीमैन, मेलविन: ऑन द मीनींग ऑफ एलीनेशन, अमेरिकन सोशियोलॉजिकल रिव्यू, 1959

फॉम, एरिक: द शेन सोसायटी,1955

फॉम, एरिक: एस्केप फ्राम फ्रीडम, एवॉन बुक्स, न्यूयॉर्क, 1941

वॉल्फ, जॉनथन: वाई रीड मार्क्स टुडे, ऑक्सफोर्ड पब्लिकेशन, 2002

मिलिंगन, मार्टिन: इकॉनमिक एण्ड फिलॉसॉफिक मैन्युस्क्रिप्टस(अनुवादित), प्रोग्रेस पब्लिकेशन, मॉस्को, 1951

हरालंबोस, माइकल और हॉलबॉर्न, मार्टिन सोशियोलॉजी थीम्स एंड पर्सपेक्टिव्स, हार्पर कॉलिंस पब्लिशर्स, लंदन, 2013

रिट्जर जॉर्ज और स्टेपनिस्की जैफरी: सोशियोलॉजिकल थ्योरी, सेज पब्लिकेशन, कैलिफोर्निया, 2017